जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

11 मार्च, 2025

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने "लैंगिकता और उसके डिजिटल असंतोष: वैश्विक दक्षिण से उपनिवेशवाद विरोधी दृष्टिकोण" पर युवा शोधकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया

सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय युवा शोधकर्ता सम्मेलन 2025 (8-9 मार्च 2025) का आयोजन किया जिसका विषय "लैंगिकता और उसके डिजिटल असंतोष: वैश्विक दक्षिण से उपनिवेशवाद विरोधी दृष्टिकोण" था । इस सम्मेलन का उद्घाटन अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महत्वपूर्ण लैंगिकता संबंधी शोध के साथ किया गया।

यह कार्यक्रम जामिया मिल्लिया इस्लामिया के माननीय कुलपति और सम्मेलन के संरक्षक प्रोफेसर मजहर आसिफ के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया जिन्होंने उद्घाटन भाषण दिया। प्रोफेसर आसिफ ने अपने संबोधन में सबसे पहले सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र को इसकी स्थापना के 25 वर्ष पूरे होने पर बधाई दी। उन्होंने इस बात पर विस्तार से चर्चा की कि किस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस लैंगिक न्याय की दिशा में की गई प्रगति पर चिंतन करने का एक अवसर है, साथ ही उन चुनौतियों को भी स्वीकार किया जाना चाहिए जिनका समाधान किया जाना बाकी है। उन्होंने लैंगिक समानता हासिल करने में जामिया मिल्लिया इस्लामिया की भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र की मानद निदेशक प्रो. निशात जैदी ने सत्र की अध्यक्षता की और व्याख्यान में उपस्थित सभी प्रतिभागियों, शोधकर्ताओं, अतिथियों और संकाय सदस्यों का स्वागत किया। प्रो. जैदी ने अपने स्वागत भाषण में डिजिटल युग में आलोचनात्मक आख्यानों के विकास के महत्व पर चर्चा की। उन्होंने इन चुनौतियों का सामना करने के लिए वैश्विक दक्षिण के विद्वानों के साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि इस दिशा में विद्वानों के विश्लेषण को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी शिक्षाविदों और महिला अध्ययन केंद्रों की है। शोध छात्रा सुश्री चैताली पंत ने सम्मेलन का कॉन्सेप्ट नोट प्रस्तुत किया।

केरल विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक अध्ययन केंद्र की प्रो. मीना पिल्लई ने “पिशाचिनी पर संकट: नैतिक आतंक के समय में डिजिटल नारीवाद” विषय पर पहला व्याख्यान दिया जिसमें डिजिटल नारीवाद की सीमा पर प्रकाश डाला गया। व्याख्यान की अध्यक्षता प्रो. जैदी ने की तथा सह-अध्यक्षता सुश्री पंत ने की।

सम्मेलन में दो पूर्ण सत्र, तीन मुख्य भाषण तथा नौ तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। पूर्ण सत्र-I की थीम, "लैंगिक संवेदनशील कृत्रिम मेधा सिस्टम का निर्माण: 3डी ('डिजाइनर - विकास - परिनियोजन') मेधा सिस्टम जवाबदेही ढांचा विकसित करना" थी जिसे जामिया मिल्लिया इस्लामिया के एमएमएजे एकेडमी ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज के सहायक प्रोफेसर डॉ. अबिरुची ओझा ने प्रस्तुत किया जिन्होंने 3डी दृष्टिकोण के माध्यम से कृत्रिम मेधा को लैंगिकता समावेशी और संवेदनशील बनाने की आवश्यकता का मूल्यांकन किया। जामिया मिल्लिया इस्लामिया के अंग्रेजी विभाग की पीएचडी स्कॉलर सुश्री जुबी जॉन अध्यक्ष थीं तथा श्री स्टीवन एस. जॉर्ज सह-अध्यक्ष थे।

पूर्ण सत्र-II की थीम "डिजिटल नृवंशविज्ञान करना: एक नारीवादी और महिला शोधकर्ता के रूप में कुछ अवलोकन" थी जिसे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के सामाजिक प्रणालियों के अध्ययन केंद्र की शोध स्कॉलर सुश्री अथिरा बीके ने प्रस्तुत किया। इस पूर्ण सत्र में एक महिला शोधकर्ता द्वारा किए जा रहे डिजिटल नृवंशविज्ञान और इसके विभिन्न आयामों पर गहन चर्चा की गई। पूर्ण सत्र की अध्यक्षता सुश्री

अलवीरा चौधरी, पीएचडी स्कॉलर, सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र ने की और सह-अध्यक्षता सुश्री पंत ने की।

"डिजिटल नारीवाद, नवउदारवाद और वर्ग असमानता" विषय पर पहला मुख्य भाषण प्रो. क्रिस्टीना शारफ, संस्कृति और विषयवस्तु की प्रोफेसर और डॉक्टरेट अध्ययन, कला और मानविकी, किंग्स कॉलेज लंदन की एसोसिएट डीन द्वारा दिया गया। इस संबोधन में नवउदारवादी ढांचे में वर्ग असमानताओं और डिजिटल नारीवाद का मूल्यांकन किया गया। सेंट स्टीफंस कॉलेज की सहायक प्रोफेसर डॉ. ज़हरा रिज़वी ने संबोधन की अध्यक्षता की। सुश्री पंत सह-अध्यक्ष थीं।

"वैश्विक दक्षिण से नारीवादी तकनीकी राजनीति के रूप में एकजुटता" विषय पर दूसरा मुख्य भाषण डॉ. फ़िरुज़ेह शोकूह वैले, एक नारीवादी समाजशास्त्री और प्यूर्टो रिको की पत्रकार द्वारा दिया गया। इस संबोधन में एकजुटता और आनंद पर विभिन्न प्रवचनों का आलोचनात्मक रूप से पता लगाया गया। डॉ. रिज़वी ने व्याख्यान की अध्यक्षता की और सुश्री चौधरी सह-अध्यक्ष थीं।

तीसरा मुख्य भाषण, "(पुनः) निर्माण/(पुनः) लैंगिकता आधारित, उत्तर औपनिवेशिक डिजिटल अभिलेखागार और एल्गोरिदमिक रूप से मध्यस्थता वाले समय और स्थान में स्वयं और दूसरों का (पुनः) वर्णन" विषय पर बोलिंग ग्रीन स्टेट यूनिवर्सिटी में मीडिया और संचार की प्रोफेसर प्रो. राधिका गजाला द्वारा दिया गया। संबोधन में स्थानिक-लौकिक प्रवचन में उत्तर औपनिवेशिक अभिलेखीकरण और स्वयं का पुनः वर्णन पर प्रकाश डाला गया। संबोधन की अध्यक्षता प्रो. जैदी ने की और सह-अध्यक्षता सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र की पीएचडी स्कॉलर सुश्री फरहाना सलाम ने की।

तकनीकी सत्र-I में सात शोध पत्र प्रस्तुत किए गए, जिनका विषय था - "लैंगिकता आधारित एल्गोरिदम, कृत्रिम मेधा नैतिकता और डिजिटल पदानुक्रम" और सत्र की अध्यक्षता सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र की पीएचडी स्कॉलर सुश्री रुक्मणी मोंगा ने की।

तकनीकी सत्र-II, जिसका विषय था - "डिजिटल प्लेटफॉर्म, लैंगिकता आधारित हिंसा और प्रतिरोध"। इस सत्र में विद्वानों ने शोधपत्र प्रस्तुत किए, जिसमें डिजिटल स्पेस और लैंगिकता आधारित हिंसा के बीच संबंधों पर चर्चा की गई तथा प्रतिरोध का भी पता लगाया गया। सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र की पीएचडी स्कॉलर सुश्री तन्वी सुमन ने सत्र की अध्यक्षता की।

तकनीकी सत्र- III, जिसका विषय था "डिजिटल क्षेत्र में लैंगिकता और कामुकता"। शोध पत्रों ने डिजिटल स्थानों के लैंगिकता और कामुकता आयामों का पता लगाया। जामिया मिल्लिया इस्लामिया के अंग्रेजी विभाग के पीएचडी स्कॉलर श्री स्टीवन ने सत्र की अध्यक्षता की।

तकनीकी सत्र- IV, जिसका विषय था " लैंगिकता आधारित शरीर, डिजिटल मीडिया और भावनात्मक कल्याण"। शोध पत्रों ने डिजिटल मीडिया में शरीर के लैंगिकता निर्धारण पर प्रकाश डाला, जो बाद में व्यक्तियों के भावनात्मक कल्याण को प्रभावित करता है। सुश्री विशाखा, पीएचडी स्कॉलर सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र ने सत्र की अध्यक्षता की।

तकनीकी सत्र-V, जिसका विषय था " लैंगिकता आधारित कथाएँ, लोककथाएँ और डिजिटल समुदाय"। विद्वानों ने कथाओं, लोककथाओं के लैंगिकता निर्धारण और डिजिटल समुदायों पर इसके प्रभाव की आलोचनात्मक जाँच की। श्री मोहम्मद हसनैन, पीएचडी स्कॉलर, सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र ने सत्र की अध्यक्षता की।

तकनीकी सत्र-VI, जिसका विषय था "नारीवादी सक्रियता, डेटा राजनीति और डिजिटल प्रतिरोध"। शोध पत्रों में डेटा की राजनीति और इसके द्वारा लाए जाने वाले नारीवादी प्रतिरोध को दर्शाया गया। सुश्री आफरीन, पीएचडी स्कॉलर, सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र ने सत्र की अध्यक्षता की।

तकनीकी सत्र- VII का विषय था "निगरानी, गोपनीयता और लैंगिक डिजिटल श्रम"। शोधकर्ताओं ने डिजिटल स्पेस में श्रम के लैंगिककरण और उसके बाद की निगरानी और गोपनीयता पहलुओं पर प्रकाश डाला। सुश्री रक्षंदा नवाज, पीएचडी स्कॉलर, सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र ने सत्र की अध्यक्षता की।

तकनीकी सत्र- VIII का विषय था "डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म अर्थव्यवस्थाएँ, लैंगिकता और उभरता हुआ डिजिटल श्रम"। शोधपत्रों में पूछा गया कि डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म अर्थव्यवस्था डिजिटल श्रम और उसके लैंगिक आयाम को कैसे प्रभावित कर रही है। सुश्री ज़ोया रिज़वी, पीएचडी स्कॉलर, सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र ने सत्र की अध्यक्षता की।

तकनीकी सत्र- IX का विषय था "डिजिटल पहचान और हाशिए की आवाज़ें"। सत्र में बताया गया कि डिजिटल स्पेस में पहचान और हाशिए की आवाज़ें किस प्रकार आगे बढ़ रही हैं। सुश्री सुमन ने सत्र की अध्यक्षता की।

सम्मेलन के लिए समापन भाषण पैन-अफ्रीकन नारीवादी, लेखिका, कार्यकर्ता और अफ्रीकन फेमिनिस्म डॉट कॉम की संपादक रोज़बेल कागुमीरे ने "डिजिटल प्रतिरोध और पुनर्कल्पना - पैन-अफ्रीकन एकजुटता का निर्माण" विषय पर दिया। इस संबोधन में पैन-अफ्रीकन एकजुटता की आलोचनात्मक नारीवादी समझ को दर्शाया गया। समापन भाषण की अध्यक्षता प्रो. जैदी ने की और सह-अध्यक्षता सुश्री चौधरी ने की। धन्यवाद ज्ञापन सुश्री चैताली पंत ने प्रस्तुत किया ।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया